गुरु नानकदेव के भजन (Guru Nanak Dev Ji- Bjajan)

1.

राम सुमिर, राम सुमिर, एही तेरो काज है॥
मायाकौ संग त्याग, हरिजूकी सरन लाग।
जगत सुख मान मिथ्या, झूठौ सब साज है॥१॥

सुपने ज्यों धन पिछान, काहे पर करत मान।
बारूकी भीत तैसें, बसुधाकौ राज है॥२॥

नानक जन कहत बात, बिनसि जैहै तेरो गात।
छिन छिन करि गयौ काल्ह तैसे जात आज है॥३॥

2.

हरि बिनु तेरो को न सहाई।
काकी मात-पिता सुत बनिता, को काहू को भाई॥
धनु धरनी अरु संपति सगरी जो मानिओ अपनाई।
तन छूटै कुछ संग न चालै, कहा ताहि लपटाई॥
दीन दयाल सदा दु:ख-भंजन, ता सिउ रुचि न बढाई।
नानक कहत जगत सभ मिथिआ, ज्यों सुपना रैनाई॥

3.

जो नर दुख में दुख नहिं मानै।
सुख सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै।।
नहिं निंदा नहिं अस्तुति जाके, लोभ-मोह अभिमाना।
हरष शोक तें रहै नियारो, नाहिं मान-अपमाना।।
आसा मनसा सकल त्यागि के, जग तें रहै निरासा।
काम, क्रोध जेहि परसे नाहीं, तेहि घट ब्रह्म निवासा।।
गुरु किरपा जेहि नर पै कीन्हीं, तिन्ह यह जुगुति पिछानी।
नानक लीन भयो गोबिंद सों, ज्यों पानी सों पानी।।

4.

जगत में झूठी देखी प्रीत।
अपने ही सुखसों सब लागे, क्या दारा क्या मीत॥
मेरो मेरो सभी कहत हैं, हित सों बाध्यौ चीत।
अंतकाल संगी नहिं कोऊ, यह अचरज की रीत॥
मन मूरख अजहूँ नहिं समुझत, सिख दै हारयो नीत।
नानक भव-जल-पार परै जो गावै प्रभु के गीत॥

5.

सब कछु जीवितकौ ब्यौहार।
मातु-पिता, भाई-सुत बांधव, अरु पुनि गृहकी नारि॥

तनतें प्रान होत जब न्यारे, टेरत प्रेत पुकार।
आध घरी को नहिं राखै, घरतें देत निकार॥

मृग तृस्ना ज्यों जग रचना यह देखौ ह्रदै बिचार।
कह नानक, भजु रामनाम नित, जातें होत उधार॥

6.

काहे रे बन खोजन जाई।
सरब निवासी सदा अलेपा, तोही संग समाई॥१॥

पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है, मुकर माहि जस छाई।
तैसे ही हरि बसै निरंतर, घट ही खोजौ भाई ॥२॥

बाहर भीतर एकै जानों, यह गुरु ग्यान बताई।
जन नानक बिन आपा चीन्हे, मिटै न भ्रमकी काई॥३॥

7.

प्रभु मेरे प्रीतम प्रान पियारे।
प्रेम-भगति निज नाम दीजिये, द्याल अनुग्रह धारे॥

सुमिरौं चरन तिहारे प्रीतम, हृदै तिहारी आसा।
संत जनाँपै करौं बेनती, मन दरसन कौ प्यासा॥

बिछुरत मरन, जीवन हरि मिलते, जनको दरसन दीजै।
नाम अधार, जीवन-धन नानक प्रभु मेरे किरपा कीजै॥

8.

अब मैं कौन उपाय करूँ॥

जेहि बिधि मनको संसय छूटै, भव-निधि पार करूँ।
जनम पाय कछु भलौ न कीन्हों, तातें अधिक डरूँ॥

गुरुमत सुन कछु ग्यान न उपजौ, पसुवत उदर भरूँ।
कह नानक, प्रभु बिरद पिछानौ, तब हौं पतित तरूँ॥

9.

यह मन नेक न कह्यौ करे।
सीख सिखाय रह्यौ अपनी सी, दुरमतितें न टरै॥

मद-माया-बस भयौ बावरौ, हरिजस नहिं उचरै।
करि परपंच जगतके डहकै अपनौ उदर भरै॥

स्वान-पूँछ ज्यों होय न सूधौ कह्यो न कान धरै।
कह नानक, भजु राम नाम नित, जातें काज सरै॥

10.

या जग मित न देख्यो कोई।
सकल जगत अपने सुख लाग्यो, दुखमें संग न होई॥

दारा-मीत,पूत संबंधी सगरे धनसों लागे।
जबहीं निरधन देख्यौ नरकों संग छाड़ि सब भागे॥

कहा कहूँ या मन बौरेकौं, इनसों नेह लगाया।
दीनानाथ सकल भय भंजन, जस ताको बिसराया॥

स्वान-पूँछ ज्यों भयो न सूधो, बहुत जतन मैं कीन्हौ।
नानक लाज बिरदकी राखौ नाम तिहारो लीन्हौ॥

11.

सुमिरन कर ले मेरे मना ,
तेरी बीती उम्र हरी नाम बिना ।

पंछी पंख बिना , हस्ती दन्त बिना , नारी पुरुष बिना ,
जैसे पुत्र पिता बिना हीना, तैसे पुरुष हरी नाम बिना ।

कूप नीर बिना , धेनु **क्षीर** बिना, धरती मेह बिना ,
जैसे तरुवर फल बिना हीना , तैसे पुरुष हरी नाम बिना ।

देह नैन बिना , रैन चन्द्र बिना , मंदिर दीप बिना ,
जैसे पंडित वेद विहीना , तैसे पुरुष हरी नाम बिना ।

काम क्रोध मद लोभ निवारो , छोड़ विरोध तू संत जना ।
कहे नानक तू सुन भगवंता, इस जग में नहीं कोई अपना ॥